आभार

सर्वप्रथम उस परब्रह्म परमात्मा को शत-शत नमन जिसकी अपार अनुकम्पा से यह कार्य सफल हो पाया है । अपनी निर्देशिका संगीत विदुषी प्रख्यात सितार वादिका प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवती पूर्व कुलपति इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, पूर्व अधिष्ठाता मंच व दृश्य कला संकाय हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला, तथा प्राचार्य सत्य साई मीरपुरी कालेज ऑफ म्यूजिक प्रशान्ति निलयम, अनन्तपुर, आंध्र प्रदेश के पद पर कार्यरत, का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मुझे प्रस्तुत कार्य के लिए दिशा दे कर मार्ग प्रशस्त किया । बाधाओं को दूर करते हुए मुझे जागरूक बनाए रखा और अनावश्यक भटकाव से बचाया ।

मेरे पूजनीय पिता (ससुर) डॉ. सियाबिहारी शरण जी के स्नेहिल दिशा-निर्देश से तथा उनके द्वारा शोध-विषय को देखने-परखने और शोध की प्रेरणा देने के कारण कृतकृत्य हूँ । यह शोध प्रबंध उनके अमूल्य, सुझावों, संकेतों से आद्यंत अनुप्रेरित है । अतः इनके प्रति लेखनी के द्वारा भावाभिव्यक्ति मात्र तुच्छ प्रयास होगा । अपनी स्वर्गीय पूजनीय माताजी (सास) को श्रद्धासुमन अर्पित करती हूं जिनके आशीर्वाद से ही मेरा शोध-कार्य पूरा हो पाया है । मैं उन उत्तरदाताओं के प्रति अत्यन्त आभारी हूं, जिनकी उपलब्धियों का उपयोग इस शोध प्रबंध में किया गया है ।

शोधार्थी अपने माता-पिता के प्रति नतमस्तक है, जो देह-बुद्धि के स्वामी हैं तथा जिनका स्नेह संबल ही प्रेरणा का मूल-आधार है । मेरे अंकल आदरणीय श्री सतीश मेहता जी विशेष आभार के पात्र हैं जिन्होंने मेरे शोधकार्य में मुझे सहयोग दिया । मैं अपने प्रति पल के साथी/सहयोगी डॉ. मधुर स्वर मिश्र जी की बहुत आभारी हूं जिन्होंने समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों द्वारा मेरी वैचारिक

और व्यावहारिक कठिनाईयों का सामाधान किया है । चि. रामेन्दु, चि. रामानुज तथा मेरे बधु-बांधव भी धन्यवाद के अधिकारी हैं, जिन्होंने शोधकार्य को सहयोग एवं गति प्रदान की है ।

मैं टंकण कार्य हेतु श्री डी. आर. चौधरी जी का आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने टंकण का कार्य बड़ी कुशलता के साथ किया है । अन्त में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जिन विद्वानों, व्यक्तियों, संस्थानों तथा अन्य स्रोंतों से मुझे शोध कार्य में सहायता मिली है उन सभी के प्रति विनम्र आभार प्रकट करती हूं ।

इति शुभम् ।

दिनांक 26.05.11

Meenu
(मीनू)
शोधार्थी